

रविवार 22 जनवरी, 2023

विषय — सत्य

स्वर्ण पाठ: निर्गमन 23: 1

"झूठी बात न फैलाना। अन्यायी साक्षी हो कर दुष्ट का साथ न देना।"

उत्तरदायी अध्ययन:

भजन संहिता 15: 1-3

भजन संहिता 18: 21-24, 32

भजन संहिता 91: 4

- ¹ हेपरमेश्वर तेरे तम्बू में कौन रहेगा? तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने पाएगा?
- ² वह जो खराई से चलता और धर्म के काम करता है, और हृदय से सच बोलता है;
- ³ जो अपनी जीभ से निन्दा नहीं करता, और न अपने मित्र की बुराई करता, और न अपने पड़ोसी की निन्दा सुनता है।
- ²¹ क्योंकि मैं यहोवा के मार्गों पर चलता रहा, और दुष्टता के कारण अपने परमेश्वर से दूर न हुआ।
- ²² क्योंकि उसके सारे निर्णय मेरे सम्मुख बने रहे और मैं ने उसकी विधियों को न त्यागा।
- ²³ और मैं उसके सम्मुख सिद्ध बना रहा, और अधर्म से अपने को बचाए रहा।
- ²⁴ यहोवा ने मुझे मेरे धर्म के अनुसार बदला दिया, और मेरे हाथों की उस शुद्धता के अनुसार जिसे वह देखता था॥
- ³² यह वही ईश्वर है, जो सामर्थ से मेरा कटिबन्ध बान्धता है, और मेरे मार्ग को सिद्ध करता है।
- ⁴ उसकी सच्चाई तेरे लिये ढाल और झिलम ठहरेगी।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 26: 1-3, 5, 11, 12

- ¹ हेयहोवा, मेरा न्याय कर, क्योंकि मैं खराई से चलता रहा हूं, और मेरा भरोसा यहोवा पर अटल बना है।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- ² हे यहोवा, मुझ को जांच और परख; मेरे मन और हृदय को परख।
- ³ क्योंकि तेरी करूणा तो मेरी आंखों के साम्हने है, और मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलता रहा हूं॥
- ⁵ मैं कुकर्मियों की संगति से घृणा रखता हूं, और दुष्टों के संग न बैठूंगा॥
- ¹¹ परन्तु मैं तो खराई से चलता रहूंगा। तू मुझे छुड़ा ले, और मुझ पर अनुग्रह कर।
- ¹² मेरे पांव चौरस स्थान में स्थिर हैं; सभाओं में मैं यहोवा को धन्य कहा करूंगा॥

2. निर्गमन 19: 17, 19

- ¹⁷ तब मूसा लोगों को परमेश्वर से भेंट करने के लिये छावनी से निकाल ले गया; और वे पर्वत के नीचे खड़े हुए।
- ¹⁹ फिर जब नरसिंगे का शब्द बढ़ता और बहुत भारी होता गया, तब मूसा बोला, और परमेश्वर ने वाणी सुनाकर उसको उत्तर दिया।

3. निर्गमन 20: 1-3, 16

- ¹ तब परमेश्वर ने ये सब वचन कहे,
- ² कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है॥
- ³ तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना॥
- ¹⁶ तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना॥

4. याकूब 3 : 2, 10-13

- ² इसलिये कि हम सब बहुत बार चूक जाते हैं: जो कोई वचन में नहीं चूकता, वही तो सिद्ध मनुष्य है; और सारी देह पर भी लगाम लगा सकता है।
- ¹⁰ एक ही मुंह से धन्यवाद और श्राप दोनों निकलते हैं।
- ¹¹ हे मेरे भाइयों, ऐसा नहीं होना चाहिए।
- ¹² क्या सोते के एक ही मुंह से मीठा और खारा जल दोनों निकलते हैं? हे मेरे भाइयों, क्या अंजीर के पेड़ में जैतून, या दाख की लता में अंजीर लग सकते हैं? वैसे ही खारे सोते से मीठा पानी नहीं निकल सकता॥
- ¹³ तुम में ज्ञानवान और समझदार कौन है? जो ऐसा हो वह अपने कामों को अच्छे चालचलन से उस नम्रता सहित प्रगट करे जो ज्ञान से उत्पन्न होती है।

5. यहोशू 24 : 14

- 14 इसलिये अब यहोवा का भय मानकर उसकी सेवा खराई और सच्चाई से करो; और जिन देवताओं की सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार और मिस्र में करते थे, उन्हें दूर करके यहोवा की सेवा करो।

6. मत्ती 11 : 1, 15, 19, 20

- 1 जब यीशु अपने बारह चेलों को आज्ञा दे चुका, तो वह उन के नगरों में उपदेश और प्रचार करने को वहां से चला गया॥
- 15 जिस के सुनने के कान हों, वह सुन ले।
- 19 मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया, और वे कहते हैं कि देखो, पेटू और पियक्कड़ मनुष्य, महसूल लेने वालों और पापियों का मित्र; पर ज्ञान अपने कामों में सच्चा ठहराया गया है।
- 20 तब वह उन नगरों को उलाहना देने लगा, जिन में उस ने बहुतेरे सामर्थ के काम किए थे; क्योंकि उन्होंने अपना मन नहीं फिराया था।

7. मत्ती 23: 23, 27, 28

- 23 हे कपटी शास्त्रियों, और फरीसियों, तुम पर हाय; तुम पोदीने और सौंफ और जीरे का दसवां अंश देते हो, परन्तु तुम ने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात् न्याय, और दया, और विश्वास को छोड़ दिया है; चाहिये था कि इन्हें भी करते रहते, और उन्हें भी न छोड़ते।
- 27 हे कपटी शास्त्रियों, और फरीसियों, तुम पर हाय; तुम चूना फिरी हुई कब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हिड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं।
- 28 इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो॥

8. मत्ती 24: 4 (लेना)-7, 10-13

- 4 सावधान रहो! कोई तुम्हें न भरमाने पाए।
- 5 क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं मसीह हूं: और बहुतों को भरमाएंगे।
- 6 तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे; देखो घबरा न जाना क्योंकि इन का होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा।
- 7 क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह जगह अकाल पड़ेंगे, और भुईडोल होंगे।
- 10 तब बहुतेरे ठोकर खाएंगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे।
- 11 और बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे।
- 12 और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा।

- ¹³ परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।

9. प्रकाशित वाक्य 18: 1, 2 (से 4th), 4, 5, 21

- ¹ इस के बाद मैं ने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिस का बड़ा अधिकार था; और पृथ्वी उसके तेज से प्रज्वलित हो गई।
- ² उस ने ऊंचे शब्द से पुकार कर कहा, कि गिर गया बड़ा बाबुल गिर गया है: और दुष्टात्माओं का निवास, और हर एक अशुद्ध आत्मा का अड्डा, और एक अशुद्ध और घृणित पक्षी का अड्डा हो गया।
- ⁴ फिर मैं ने स्वर्ग से किसी और का शब्द सुना, कि हे मेरे लोगों, उस में से निकल आओ; कि तुम उसके पापों में भागी न हो, और उस की विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पड़े।
- ⁵ क्योंकि उसके पाप स्वर्ग तक पहुंच गए हैं, और उसके अधर्म परमेश्वर को स्मरण आए हैं।
- ²¹ फिर एक बलवन्त स्वर्गदूत ने बड़ी चक्की के पाट के समान एक पत्थर उठाया, और यह कह कर समुद्र में फेंक दिया, कि बड़ा नगर बाबुल ऐसे ही बड़े बल से गिराया जाएगा, और फिर कभी उसका पता न मिलेगा।

10. प्रकाशित वाक्य 20: 1-3 (से)

- ¹ फिर मैं ने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा; जिस के हाथ में अथाह कुंड की कुंजी, और एक बड़ी जंजीर थी।
- ² और उस ने उस अजगर, अर्थात् पुराने सांप को, जो इब्लीस और शैतान है; पकड़ के हजार वर्ष के लिये बान्ध दिया।
- ³ और उसे अथाह कुंड में डाल कर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर दी, कि वह हजार वर्ष के पूरे होने तक जाति जाति के लोगों को फिर न भरमाए; इस के बाद अवश्य है, कि थोड़ी देर के लिये फिर खोला जाए॥

11. प्रकाशित वाक्य 19: 1, 4-6

- ¹ इस के बाद मैं ने स्वर्ग में मानो बड़ी भीड़ को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि हल्लिलूय्याह! उद्धार, और महिमा, और सामर्थ हमारे परमेश्वर ही की है।
- ⁴ और चौबीसों प्राचीनों और चारों प्राणियों ने गिर कर परमेश्वर को दण्डवत् किया; जो सिंहासन पर बैठा था, और कहा, आमीन, हल्लिलूय्याह!
- ⁵ और सिंहासन में से एक शब्द निकला, कि हे हमारे परमेश्वर से सब डरने वाले दासों, क्या छोटे, क्या बड़े; तुम सब उस की स्तुति करो।

- ⁶ फिर मैं ने बड़ी भीड़ का सा, और बहुत जल का सा शब्द, और गर्जनों का सा बड़ा शब्द सुना, कि हल्लिलूय्याह! इसलिये कि प्रभु हमारा परमेश्वर, सर्वशक्तिमान राज्य करता है।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 380 : 4 (सत्य)-7

सत्य की हमेशा जीत होती है। रोग और पाप अपने ही भार से गिरते हैं। सत्य युगों की चट्टान है, कोने का पत्थर है, "परंतु जिस पर वह गिरेगा, उसे वह पीस डालेगा॥"

2. 252 : 7-14

जब मिथ्या मानवीय विश्वासों को अपने मिथ्यात्व का थोड़ा सा भी पता चलता है, तो वे मिटने लगते हैं। त्रुटि और उसके कार्यों का ज्ञान सत्य की उस समझ से पहले होना चाहिए जो त्रुटि को नष्ट कर देता है, जब तक कि संपूर्ण नश्वर, भौतिक त्रुटि अंत में गायब नहीं हो जाती है, और शाश्वत सत्य, मनुष्य द्वारा और आत्मा द्वारा बनाया गया, उसकी सच्ची समानता के रूप में समझा और पहचाना जाता है।

3. 129 : 1 (में)-6

...क्रिश्चियन साइंस में, कोई मतभेद या विरोधाभास नहीं हैं क्योंकि इसका तर्क उतना ही सामंजस्यपूर्ण है जितना कि सटीक रूप से बताए गए न्यायवाक्य का तर्क या अंकगणित में ठीक से गणना की गई राशि। सत्य हमेशा सत्य होता है, और आधार या निष्कर्ष में कोई त्रुटि बर्दाश्त नहीं कर सकता।

4. 72 : 9 (जैसा)-12, 30-32

जैसे प्रकाश अन्धकार को नष्ट कर देता है और अन्धकार के स्थान पर सब प्रकाश हो जाता है, वैसे ही (परम विज्ञान में) आत्मा या ईश्वर ही मनुष्य को सत्य दाता है।

व्यक्तिगत अंतर्संबंध नहीं बल्कि ईश्वरीय कानून पृथ्वी और मानवता के लिए सत्य, स्वास्थ्य और सद्भाव का संचारक है।

5. 7 : 32-9

पाखंड धर्म के लिए घातक है।

एक शाब्दिक प्रार्थना आत्म-औचित्य की एक शांत भावना प्रदान कर सकती है, हालांकि यह पापी को पाखंडी बना देती है। हमें कभी भी सच्चे हृदय से निराश होने की आवश्यकता नहीं है; लेकिन उन लोगों के लिए बहुत कम उम्मीद है जो अपनी दुष्टता के साथ अचानक आमने-सामने आते हैं और फिर इसे छिपाने की कोशिश करते हैं। उनकी प्रार्थनाएं सूचक हैं जो उनके चरित्र के अनुरूप नहीं हैं। वे पाप के साथ गुप्त संगति रखते हैं, और इस तरह के बाहरी लोगों के बारे में यीशु ने कहा है, "सफेदी से भरी हुई कब्रों की तरह ... सभी अशुद्धता से भरा हुआ।"

6. 52 : 29-32

फरीसियों के आरोप उनके धर्म के समान ही आत्म-विरोधाभासी थे। धर्मांध, लुटेरे, कपटी, यीशु को खाऊ और शराब पीने वाला कहते थे।

7. 53 : 8-10, 16-24

जीसस की प्रतिष्ठा उनके चरित्र के बिल्कुल विपरीत थी। क्यों? क्योंकि यीशु के ईश्वरीय सिद्धांत और व्यवहार को गलत समझा गया था।

संसार उस बेचैनी की सही व्याख्या नहीं कर सका जो यीशु ने प्रेरित की और आध्यात्मिक आशीर्षों जो ऐसी बेचैनी से प्रवाहित हो सकती हैं। विज्ञान सदमा का कारण दिखाता है जो अक्सर सत्य द्वारा उत्पन्न होता है - अर्थात्, यह सदमा व्यक्ति और सत्य के बीच बड़ी दूरी से उत्पन्न होता है। पतरस की तरह, हमें सच्चाई को नकारने या उस आजीवन बलिदान का उपहास करने के बजाय जो अच्छाई बुराई के विनाश के लिए करती है, चेतावनी पर रोना चाहिए।

8. 446 : 18 (ए)-20, 30-32

एक गलत मकसद में हार शामिल है। मन की चिकित्सा के विज्ञान में, ईमानदार होना अत्यावश्यक है, क्योंकि जीत अपरिवर्तनीय अधिकार के पक्ष में है।

अधर्म को ढँकने से समृद्धि और किसी भी कारण की अंतिम विजय को रोका जा सकेगा। त्रुटि को मिटाने की अज्ञानता अक्सर आपको इसके दुरुपयोग के अधीन करती है।

9. 447 : 20-29

उनके सभी रूपों में बुराई और बीमारी के दावों को बेनकाब और उनकी निंदा करें, लेकिन उनमें कोई वास्तविकता का एहसास न करें। एक पापी को केवल यह आश्वासन देकर सुधारा नहीं जाता है कि वह पापी नहीं हो सकता क्योंकि कोई पाप नहीं है। पाप के दावे को कम करने के लिए, आपको इसका पता लगाना होगा, मुखौटा हटाना होगा, भ्रम को इंगित करना होगा, और इस तरह पाप पर विजय प्राप्त करनी होगी और इस तरह

इसकी असत्यता को साबित करना होगा। बीमार केवल यह घोषित करने से ठीक नहीं होते कि कोई बीमारी नहीं है, बल्कि यह जानने से कि कोई बीमारी नहीं है।

10. 225 : 5-13

आप जान सकते हैं कि पहला सत्य अपने अनुयायियों की पवित्रता और ईमानदारी से कब आगे बढ़ता है। इस प्रकार यह है कि समय की स्वतंत्रता के बैनर पर मार्च का आयोजन होता है। इस दुनिया की शक्तियाँ लड़ेंगी, और अपने प्रहरी को आज्ञा देंगी कि जब तक वह अपने सिस्टम की सदस्यता न ले, तब तक सच्चाई को पहरा न दें; लेकिन नुकीले चाकू की ओर ध्यान न देकर विज्ञान मार्च करता है। हमेशा कुछ खटपट होती है, लेकिन सच्चाई के मानक के लिए एक रैली है।

11. 458 : 23-31

ईसाई वैज्ञानिक वैज्ञानिक ईश्वरीय कानून को दर्शाता है, इस प्रकार यह स्वयं के लिए एक कानून बन जाता है। वह किसी आदमी को हिंसा नहीं करता। न ही वह झूठा अभियुक्त है। साइंटिस्ट बुद्धिमानी से अपने पाठ्यक्रम को आकार देते हैं, और ईश्वरीय मन की अग्रणी का अनुसरण करने में ईमानदार और सुसंगत हैं। उसे जीवित रहने के साथ-साथ उपचार और शिक्षा के माध्यम से साबित करना होगा कि मसीह का मार्ग एकमात्र ऐसा है जिसके द्वारा नश्वर लोगों को पाप और बीमारी से बचाया जाता है।

12. 453 : 16 (ईमानदारी)-23

ईमानदारी आध्यात्मिक शक्ति है। बेईमानी मानवीय कमजोरी है, जो दैवीय सहायता से वंचित है। आप पाप को उजागर करते हैं, चोट पहुँचाने के लिए नहीं, बल्कि भौतिक व्यक्ति को आशीर्वाद देने के लिए; और नेक नीयत का प्रतिफल होता है। छिपा हुआ पाप ऊँचे स्थानों पर आत्मिक दुष्टता है। इस विज्ञान में बहाना करने वाला ईश्वर को धन्यवाद देता है कि कोई बुराई नहीं है, फिर भी अच्छाई के नाम पर बुराई की सेवा करता है।

13. 581 : 17-22

बेबीलोन स्व-विनाशकारी त्रुटि; एक राज्य अपने आप में विभाजित है, जो खड़ा नहीं हो सकता; भौतिक ज्ञान।

पाँच भौतिक इन्द्रियों से प्राप्त प्रमाणों के आधार पर जितना ऊँचा मिथ्या ज्ञान निर्मित होता है, उतना ही भ्रम उत्पन्न होता है और उसकी संरचना का पतन निश्चित होता है।

14. 567 : 18-23

वह झूठा दावा - वह प्राचीन मान्यता, वह पुरानी नागिन जिसका नाम शैतान (बुराई) है, यह दावा करते हुए कि पुरुषों को लाभ पहुंचाने या उन्हें घायल करने के लिए या तो बुद्धि में है - शुद्ध भ्रम है, लाल ड्रैगन; और यह क्राइस्ट, सत्य, आध्यात्मिक विचार द्वारा डाली गई है, और इसलिए शक्तिहीन साबित हुई है।

15. 571 : 22-2

ट्रॉप और रूपक के माध्यम से, रेवलेटर, आत्मा का अमर मुंशी और एक सच्चे आदर्शवाद, वह दर्पण प्रस्तुत करता है जिसमें नश्वर लोग अपनी छवि देख सकते हैं। महत्वपूर्ण आकृतियों में, वह उन विचारों को दर्शाता है जो वह नश्वर मन में देखता है। इस प्रकार वह पाप के अहंकार को धिक्कारता है, और उसके विनाश का पूर्वाभास करता है। अपनी आध्यात्मिक शक्ति के साथ, उन्होंने महिमा के द्वार खोल दिए हैं, और पाप, जादू-टोना, वासना और पाखंड को पछाड़ते हुए दिव्य विज्ञान की उदात्त भव्यता के साथ बुतपरस्ती की रात को रोशन कर दिया है। वह पगड़ी और राजदण्ड छीन लेता है। वह शुद्ध और निर्मल धर्म को सिंहासन पर बिठाता है, और केवल उन्हीं को ऊँचे पर उठाता है, जिन्होंने आज्ञाकारिता और कष्ट सहते हुए अपने वस्त्र सफेद कर लिए हैं।

16. 118 : 10-12

युग बीत जाते हैं, लेकिन सत्य का यह उत्थान कभी काम पर होता है। इसे त्रुटि के पूरे द्रव्यमान को नष्ट करना चाहिए, और इसलिए मनुष्य की आध्यात्मिक स्वतंत्रता में अनंत काल तक महिमामंडित किया जाना चाहिए।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6